

डोगरी तथा मलयालम भाषा में कवि गोष्ठी का किया आयोजन



ऑनलाइन के माध्यम से कवि गोष्ठी में भाग लेते हुए कवि।

जम्मू (सवेरा) : साहित्य अकादमी नई दिल्ली की तरफ से ऑनलाइन साहित्य ब्रॉखला एक भारत भैंड भास्त के तहत डोगरी तथा मलयालम भाषा में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमे डोगरी एवं मलयालम भाषा के कवियों ने भाग लिया। इस कविता पाठ में जम्मू से साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित डोगरी भाषा के युग्म कवि राजेंद्र राज्ञा तथा डोगरी भाषा के ही मराहूर साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत कवि कुलदीप अभिशाप ने अपनी कविताएं पढ़ी। वही दूसरी ओर मलयालम भाषा मे सुप्रसिद्ध कवित्री अनीता थपी रवा सुप्रसिद्ध कवि अलकोड लीलाशूभान ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। इस कार्यक्रम का संयोजन साहित्य अकादमी नई दिल्ली के सह सवित्र डायटर एन. सुरेश बाबू ने किया। अपने शुरुआती वक्तव्य मे डायटर एन. सुरेश बाबू ने कहा कि इस प्रकार के अंतर भाषी कार्यक्रमों के आयोजन का उद्देश्य विभिन्न भाषाओं में लिखने वाले कवियों को एक मवपरलाना है ताकि विभिन्न भाषाओं से जुड़े साहित्यकार भारत की सांझा सांस्कृतिक विरासत से सबरु हो सके। कार्यक्रम का समापन भी डा. एन. सुरेश बाबू के घन्घवाद प्रस्ताव से हुआ। इस कार्यक्रम में सभी कवियों ने अपनी कविताओं से श्रीताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कटु सत्य

जम्मू। शनिवार,
26 जून, 2021

ડોગરી-મલયાલમ કવિયોંને એક મંચ પર પઢ્યી અપની કવિતાએ

四

नालिंग अवलंगी नहीं हिंडी वो
जौही से अवलंगन मालिंग शुक्रवार एक
परत जैसे प्राप्त के तरह देखने वाला
अवलंगन चुक्का में बढ़ती गेहूँ का
अवलंगन बिल्ड ग्राम, जिसमें ढोनी एवं
भलाल चुक्का के लकड़ियों ने प्रभाव
दिया। इस लकड़ियाँ चुक्का में जम्बू औं
लालिंग अवलंगन द्वारा समर्पित ग्रामीं
चुक्का के चुक्का लकड़ियाँ तांड़ी तांड़ी
दुंगाँ याप के ही प्रधानकारण का
प्राप्तिंग अवलंगी द्वारा चुक्कन्दू की
बहुतायी अवलंगन में अपनी चमड़ीका
सही। वही टूटवारी और भलाल चुक्का प्रभाव
में बढ़ती अपील करते तरह दृष्टि
अवलंगी रोजालंगन ने वही अपने
चमड़ीकाएं या चुक्का दिया। चमड़ी गेहूँ
में चल दिए ताहो कभी चमड़ीकाएं ये कहा
कि एक जन्म अपने जन्म में ज



मनुष्य का लोहे तांडे से जहाँ तक
इस तांडे के प्रत्येकी से तूं हाथ के कंठी
एक-दूसरे को मूँह लगानी। तांडान
चाहिए। ऐसे उत्तमों से ही एक भास
किया भास या जल्द भास हो
जाएगा। महाभीमान वर्णी मध्येष्ट
अपने इन बीं गाम रख। अभीष्ट में
एकत्र कर लिखि उत्तम राघव

कर्तव्य का लोकोपल नहीं
अवसराएँ नहीं दिल्ले के सदृश भूमिये
उत्तराएँ युग्मात् वाहने दिल्ला अपने
युग्मात् वाहना में उत्तराएँ युग्मात्
जले ये कल यि इस उत्तर के अंतर
यही यमोन्में हि अवक्षण का
द्वितीय विविध वाहनों पे दिल्ली
मही बनिवै जी एक यंग पर लाग

है तब विभिन्न प्रकारों में तुम
वर्णनकार पात और यह
संस्कृति विभाग में कृपया ही
मार्द। कल्पित का सम्बन्ध वे व्य-
क्ति सुनो कानु वे अवश्य इन्हें
में हैं। विभिन्नों ने इस वात वर्ती
दिव्य की ओर भी इस उद्देश का
अवधारण की उम्मीद की।

शनिवार, 26 जून 2021

III

डोगरी-मलयालम कवियों ने एक मंच पर पढ़ी अपनी कविताएं

अमृता शेषनाथ

कविताय अवासदी यह दिलों की
अंदर से बहताकाम संकेतिय सुखाक
एक भावात खिलाह के लिया दूसरों
जब बहावलत बढ़ाता है और गीतों
के अवासदी कवय गाय, गिरफ्तार
दोनों एवं बहावलत पाह के
कवियों ने यह लिपि। इस कविता
के से उम्मीदों की कविताय अवासदी
द्वारा समझित होनी भया के दूसरा
कवि राजेंद्र राज जब दोनों भयों
के ही अवासदी के एवं कविता
बहावलों द्वारा उत्तराधि अविभ
क्षितियों अनुभाव, वे अपनी
कविताएं बोली।

वही दोनों जो बहावलत पाहत



थे कविताये अवासदी दोनों जब कवि
अवासदी भी बहावलत ने भी अपनी
कविताओं का यह किया। कवि
द्वितीये वे यह सेवे जल्मी भूम्भे कीतियों
वे कवि यह उम्मीदों अपने अप
में नहीं अनुभव था। यहाँ राज ने
कहा कि इस लिये के इकामों में पूरी

राज के कवि एक-दूसरे को मूर
साझें। अम्भान चली। ऐसे
वर्षों से ही एक भावत सेवु भावत
का मानव साकाश ही मानें। यह
वे कवि यह उम्मीदों अपने अप
में नहीं अनुभव था। यहाँ राज ने
कहा कि इस लिये के इकामों में पूरी

कविताय या राजोंका लालित
अवासदी जहाँ दिलों के यह सारिया
बहावल एवं सुरेत बाप्त न किया।
अपने जात्याकालीन बहावल में बहावल
एवं सुरेत बाप्त में कहा कि इस
प्रकाश के अंत भवी कावांडादे की
अवासदी या उद्दीप विभिन्न
भावाओं में विभिन्न तातों दीर्घियों की
एक बात यह लगत है कुट्टी विभिन्न
भावाओं में जुहे सारियाकाम भाव
की माझा साकाश्विभव विभासा में
कमज़ोर ही माझे कावांडादे या
मानवत भी यह एवं सुरेत बाप्त के
बहावल इकाम में है। कविताये
वे इस भाव का जंग लिया था। फिर
भी इस भाव का अवासदी द्वारा राज
परिवार।